एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसों की फसल में खरपतवार प्रबंधन

(*आर. एस. बोचल्या, दीपक कुमार, मीनाक्षी अत्री, मोनिका मिनिया एवं स्वाति मेहता)
शस्य विज्ञान विभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)
* rbochalya651@gmail.com

सरसों 'ब्रेसीकैसी' कुल के पादप प्राचीन काल से उगाया जा रहे हैं। सरसों तिलहनी फसल है, जिसको जापान व चीन में पत्तेदार सब्जी के लिए उगाया जाता है। भारत में तेलिय फसल के रूप में उगाया जाता है इसका एशिया महाद्वीप के देशों में आगमन 18 वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों से माना जाता है। सरसों शब्द को 'संस्कृत' भाषा के 'सारस्य' के नाम से जाना जाता है। सरसों के बीजों में तेल की मात्रा 37 से 49 प्रतिशत पाया जाता है। उत्तरी भारत में मुख्य तेल का स्रोत है, इसके तेल की उपयोगिता औषधि के रूप में बालों में तेल लगाने में, ग्रीस निर्माण के रूप में है। इसकी खली का उपयोग पशुओं को खिलाने व खाद के रूप में किया जाता है। हरी अवस्था में पशुओं को खिलाने के काम आती है। सरसों की पत्तियों में सल्फर की मात्रा होने के कारण सब्जी के रूप में काम में ली जाती है।

विश्व भर के 70 से अधिक देशों में 31.68 मिलियन हेक्टर क्षेत्रफल पर 59.07 मिलीयन बीज का उत्पादन प्राप्त होता है। विश्व के प्रमुख सरसों उत्पादक देश ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, भारत व चीन देश विश्व के सभी देशों में छत्रपाल 7.39 मिलियन हेक्टर उत्पादन 13.6 मिलियन टन की दृष्टि से अग्रणी देश है, जबकि भारत देश का कुल क्षेत्रफल 5.59 मिलियन हेक्टर उत्पादन 6.61 मिलियन टन है। भारतीय सरसों उत्पादक राज्यों की उत्पादकता 1182 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। भारत के मुख्य सचिव उत्पादक राज्य राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश राज्य में कुल देश का 78 प्रतिशत क्षेत्रफल व 85 प्रतिशत उत्पादन सरसों का होता है।

आज के समय राजस्थान राज्य अकेला 45 प्रतिशत क्षेत्रफल 48 प्रतिशत कुल देश के उत्पादन का हिस्सा है सरसों के खेत में खरपतवार के माध्यम से 20.70 प्रतिशत तक उपज में हानि होती है। फसल को शुरुआती दौर में खरपतवार रहित रखना चाहिए। फसल के प्रारंभिक वृद्धि काल बुवाई के 45 से 60 दिनों तक खरपतवार से प्रतिस्पर्धा अधिक होती है, बुवाई के बाद प्रथम निराई गुड़ाई कर देनी चाहिए प्रभावित खरपतवार का नियंत्रण करने के लिए वर्ष आधारित क्षेत्रों में एक बार हाथों से खरपतवार बुवाई के 25 दिनों बाद निकालना चाहिए तथा सिंचित क्षेत्रों में 25 व 45 दिनों बाद खरपतवार निकालना चाहिए पौधे की उचित वृद्धि में विकास के लिए मर्दा के ऊपर मल्च का प्रयोग करना चाहिए जिससे वृद्धि का विकास के साथ-साथ मृदा की नमी के नुकसान को भी रोकती है।

सरसों की फसल में लगने वाले प्रमुख खरपतवार के पौधे बथुआ (*चीनपोडियम एल्बम*), खरबथुआ (*चीनपोडियम* मुर्रेल), सेंजी (*मेलिलोट्स इंडिका*), मोथा (*साइप्रस रोडटेंडस*), दूबघास (*सायनोडोन*

डेक्टीलॉन), सत्यानाशी (*आर्जीमोन मेक्सिकाना*), कंटेली (*सर्शियम आर्वेंस*), औरोंबंकी इजिप्टीका, प्याजी(*एस्पोडिलस टेनुफोलियस*) इत्यादि ।

- प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हेतु उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- सरसों + गेहूं या सरसों + चना को मिश्रित फसल के रूप में उगाना चाहिए।
- शत-प्रतिशत शुद्ध बीज का ही बुआई हेतु प्रयोग करें।
- वरुणा एवं प्रकाश नामक किस्मों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।
- जिन क्षेत्रों में रबी के खरपतवार अधिक उगते हैं उस दशा में खरपतवारों का अंकुरित करने के बाद बखर चलाकर नष्ट कर दें (स्टील सीट बेड) इसके बाद बीजों की बुवाई करनी चाहिए।
- फ्लूक्लोरालीन शाकनाशी की 1 किलो ग्राम मात्रा को सरसों 800 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल लगाने से पहले छिड़काव करना चाहिए फ्लूक्लोरालीन शाकनाशी की अपेक्षा पेंडीमिथायलीन शाकनाशी से 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर 500 से 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के बाद में अंकुरण से पहले प्रयोग करना बेहतर खरपतवार नियंत्रण होगा।
- यदि फसल की बुवाई के बाद भी खेत में खरपतवार आते हैं तो उसके नियंत्रण के लिए आयसोप्रोटूरोन नामक शाकनाशी का 0.75 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 600 से 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30 दिनों बाद छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में औरोंबंकी एक समस्या ग्रस्त खरपतवार है जो कि एक परजीवी खरपतवार है जिसके नियंत्रण के लिए फसल चक्र में खाद्यान्न में दलहनी फसलें शामिल करें, तिल के बाद सरसों की फसल लेने लगातार सरसों की फसल लेने से बचें और औरोंबंकी खरपतवार के ऊपर सोयाबीन तेल का छिड़काव करें।
- सरसों की फसल के बीजों से मिलते जुलते बीज सत्यानाशी खरपतवार के होते हैं जो कि सरसों के तेल में भी यदि 0.1 प्रतिशत से भी कम हो तो ड्रॉप्सी नामक रोग उत्पन्न हो जाता है अतः सरसों की फसल के बीजों से सत्यानाशी के बीजों को दूर रखा जाना चाहिए।

E-Magazine for Agricultural Articles (www.agriarticles.com)